धर्मशास्त्रों में स्त्रीविमर्श

SNKT2006 - संस्कृतवाङ्मये स्त्री-विमर्शः

एम० ए० द्वितीयसत्रम्

डॉ० विश्वेशवाग्मी

सहायकाचार्यः, संस्कृतविभागः

महात्मा-गाँधी-केन्द्रीय-विश्वविद्यालयः, बिहारः

vishujnu@gmail.com

धर्मशास्त्र का सामान्य परिचय

- प्राचीन काल में मानव समाज की व्यवस्था को बनाए रखने के लिए नीति, सदाचार, धर्म (कर्त्तव्य) सम्बन्धी नियम एवं उत्तराधिकार के विवेचन हेतु धर्मशास्त्रों का प्रणयन किया गया।
- **धर्मशास्त्र**
  - धर्मसूत्र-

    सूत्रसाहित्य- कल्पसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र ।

    गौतमधर्मसूत्र, बोधायनधर्मसूत्र, आपस्तम्बधर्मसूत्र, हारितधर्मसूत्र आदि प्रमुख
  - स्मृतिग्रन्थ-

    श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः । - मनुस्मृति २/१०

    प्रायः १०० जिनमें मनुस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति, पाराशरस्मृति, नारदस्मृति, बृहस्पतिस्मृति आदि प्रमुख ।

स्मृति ग्रन्थों की आवश्यकता

- ✓ स्मृतियों का समय- यूनानी, शक, कुषाण, हूण आदि वैदेशिक आक्रमणों का समय।
- ✓ भारतीय समाज एवं संस्कृति का संक्रमण काल।
- ✓ समाज में अशान्ति एवं अराजकता का समय।
- ✓ समाज एवं व्यक्तिगत चरित्र दोनों का ह्रास।
- ✓ वैदिक काल की तरह उच्च आदर्श जीवन के अंग नहीं।
- ✓ विभिन्न कुरीतियाँ एवं कुसंस्कार समाज में व्याप्त।
- ✓ उपर्युक्त स्थितियों में नीतिनिर्माताओं ने समाज की सुचारु व्यवस्था हेतु कठोर नियमों की आवश्यकता पर बल दिया।
- ✓ नियमों को लेखबद्ध एवं कानूनी मान्यता देने का कार्य।

स्मृति कालीन स्त्रियों की दशा

- वैदिक समाज में 'सरस्वती' एवं 'उषा' के रूप में स्त्री को साक्षात् देवी की मान्यता।
- स्मृतिकाल में उसका देवी पद क्षीण हो गया था। वह पाप एवं पुण्य दोनों की भागी थी।
- इसी कारण स्मृतियों में स्त्री के प्रति दोनों प्रकार का दृष्टिकोण-
  - हारित "व्यभिचारिणी स्त्री की नाक- कान काटकर उसे निर्वासित" करने की बात करते हैं। - वृद्ध हारित स्मृति- ७/१/१९२
  - वही पाराशर स्मृतिकार स्त्री, बालक, सेवक, गौ, और ब्राह्मण पर क्रोध नहीं करने का निर्देश देते हैं तथा कहते है कि "स्त्रियाँ धरित्री के समान है इसलिए उनके दोषों पर क्रोध नहीं करना चाहिए। - पाराशर स्मृति ९/६१ एवं १०/२५, अत्रिस्मृति ५/२-३ तथा देवल स्मृति ५०-५२ आदि ने भी इसका समर्थन किया है।
  - वस्तुत: स्मृतिकारों की अपेक्षा उनके व्याख्याकार स्त्रियों के प्रति अत्यन्त कठोर।

स्मृति काल में स्त्री-शिक्षा का ह्रास

- शिक्षा के विषय में वैदिककाल से अधोगति।
- स्त्रियों के उपनयन संस्कार पर प्रायशः प्रतिबन्ध।
- वेदाध्ययन से विमुख , शूद्रों के समान स्थिति।
- विवाह को छोडकर स्त्रियों के अन्य सभी संस्कारों में वेद-मन्त्रों का उच्चारण समाप्तप्रायः।
- कुछ स्मृतियों में यद्यपि शिक्षा के उच्च आदर्श।
- व्याख्याकारों द्वारा स्त्री शिक्षा पर अधिक कठोर प्रतिबन्ध-
  - मेधातिथि मनुस्मृति (२/४९) की व्याख्या में एक मनोरंजक प्रश्न उठाया है कि ब्रह्मचारी लोग भिक्षा माँगते समय स्त्रियों से "भवति भिक्षां देहि" वाला संस्कृत वाक्य क्यों बोलते हैं, जब कि वे यह भाषा नहीं जानती? जिससे मेधातिथि के समय स्त्रियों की शैक्षणिक दुर्दशा स्पष्ट होती है।

कन्या की महत्ता

- ✓ मनु ने कन्या को पुत्रवत् माना है। उसके होते हुए पिता की सम्पत्ति पर किसी और का अधिकार कैसे सम्भव है –

यथैवात्मा तथा पुत्रः पुत्रेण दुहिता समा।

तस्यां आत्मनि तिष्ठन्त्यां कथं अन्यो धनं हरेत्।। मनुस्मृति ९.१३०

नारस्मृति, दायभाग ५०, बृहस्पति स्मृति ७४३

- ✓ शौनक कारिका ने आठ वस्तुएँ मंगलकारी मानी हैं। जिसमें एक कन्या भी है-

"दर्पणः पूर्णकलशः कन्या सुमनसोऽदक्षता दीपमाला ध्वजा लाजाः सप्रोक्ताश्चाष्टमङ्गलम्"

कन्या के विवाह का दायित्त्व

- ✓ वैदिक काल के समान स्मृतिकाल में स्वयंवर विवाह को अधिक मान्यता नहीं।
- ✓ याज्ञवल्क्य के अनुसार यदि अभिभावक पागल अथवा किसी दोष से ग्रस्त हों तभी कन्या को स्वयंवर विवाह करना चाहिए। - याज्ञ० स्मृ० २४/३८-३९
- ✓ नारद ने कन्या के विवाह के लिए क्रमशः- पिता, भाई, पितामह, मामा, सकुल्य, बान्धव, माता का उत्तरदायित्त्व निश्चित किया है। - नारदस्मृ० ,स्त्रीपुंस २०-२३
- ✓ कन्यादान के सम्बन्ध में माता को अल्प दायित्त्व
- ✓ कन्या क्रय को निन्दित कर्म

बहुपत्नी प्रथा

- धर्मशास्त्रों में बहुपत्नीकता को अधिक सम्मान प्राप्त नहीं है।
- आपस्तम्ब के अनुसार धर्म एवं सन्तति से युक्त एक पत्नी ही श्रेष्ठ। केवल सन्तान के अभाव में द्वितीय पत्नी की अनुमति।- आपस्तम्बधर्मसूत्र २/५/११/१२-१३
- निर्दोष पत्नी का त्याग करने वाले को कठोर दण्ड।- वही १/१०/२८/१९, नारद की भी यही सम्मति।
- तथापि समाज में इस कुप्रथा की व्याप्ति के कारण –
  - पुत्रों की अत्यधिक महत्ता
  - बाल-विवाह
  - स्त्रियों की अशिक्षा
  - स्त्रियों पर अधिकार की भावना
  - स्त्रियों की आश्रितत

नारी सम्मान

- दक्षस्मृति के अनुसार यदि भार्या अनुकूल हो तो गृहस्थाश्रम से आनन्दप्रद कुछ भी नहीं ।-

पत्नीमूलं गृहे पुंसा यदिच्छन्दोनुवर्तिनी ।- दक्षस्मृति ४/१

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता: ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला: क्रिया: ।। मनुस्मृति ३/५६
शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् ।
न शोचन्ति तु यत्रैता वर्धते तद्धि सर्वदा ।। मनुस्मृति ३/५७

- जिस कुल में भार्या पति से एवं पति पत्नी से सन्तुष्ट, वहाँ नित्य कल्याण रहता है ।-

सन्तुष्टो भार्यया भर्ता भर्त्रा भार्या तथैव च । मनु० ३/६०

माता के रूप में स्त्री का सम्मान

- स्मृतियों में दस उपाध्यायों से आचार्य, दस आचार्यों से पिता, सौ पिताओं से भी माता का स्थान अधिक उच्च
- नारी और ब्राह्मण की रक्षा के लिए किसी को मारना भी पडे तो दोष नहीं।
- माता एवं पिता के मध्य विवाद में पुत्र को माता का पक्ष लेना श्रेयस्कर-

मातारेवानुयायात् सा हि धारिणी पोषिणी च।- संस्कारप्रकाश, पृ० ४७९

व्यास स्मृति के अनुसार नारी का सारा शरीर ही पवित्र है। जो नारी जाति से घृणा करते हैं वो मानों अपनी माता का ही अपमान करते हैं।

सन्दर्भ-

- धर्मशास्त्र का इतिहास, डॉ० पाण्डुरंग वामन काणे, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, १९९२
- प्राचीन भारतीय साहित्य में नारी, डॉ० गजानन शर्मा, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद
- The Position of Women in Hindu Civiligation, A.S. Altekar, Banaras, 1938.
- Women in Ancient India, Clarisse Bader, Chowkhamba Sanskrit Series Varanasi, 1964.

धन्यवादः